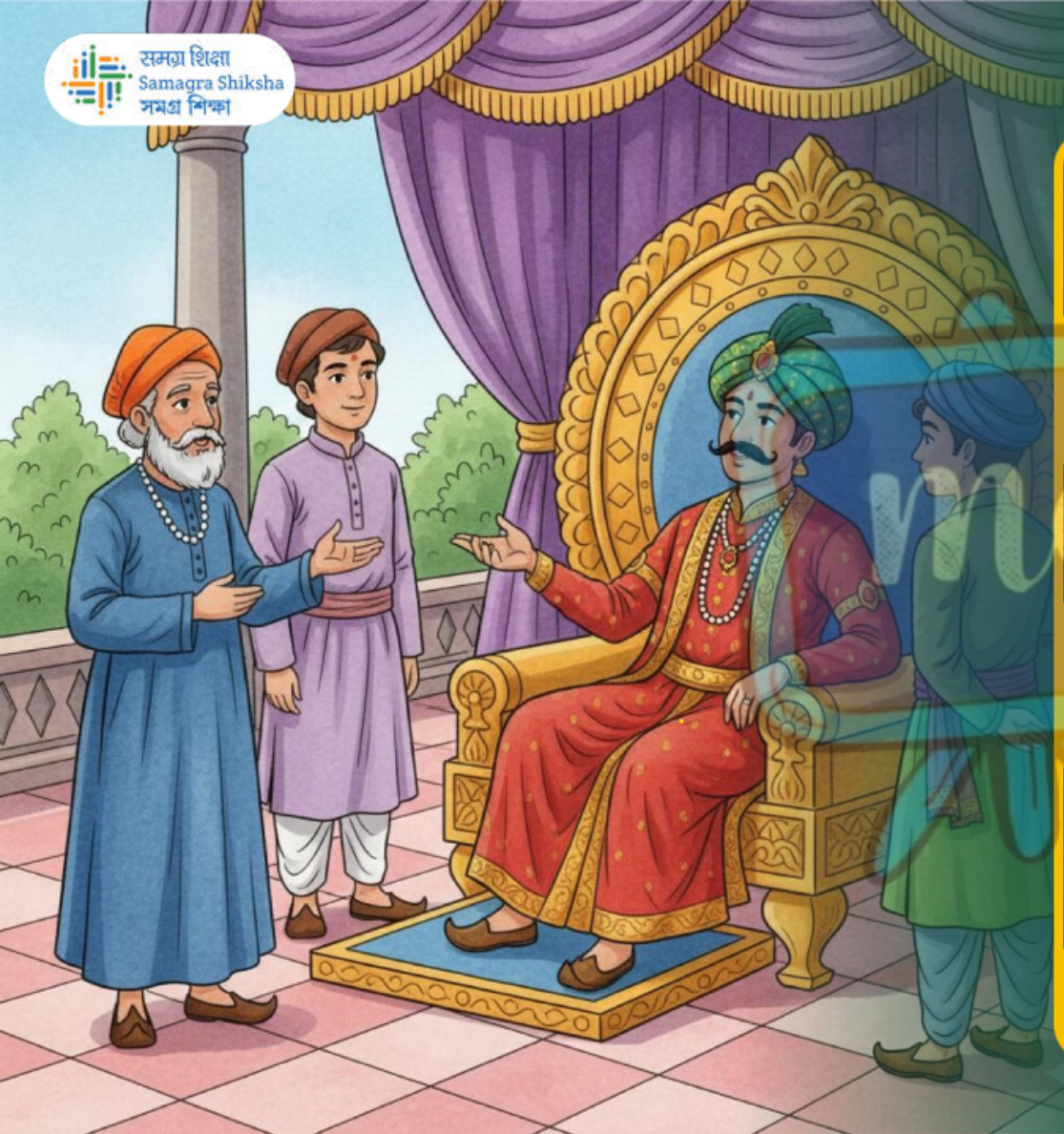


समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 2

परीक्षा

प्रेमचंद (1880-1936)

भाग – 2

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



अँधेरा हो गया था। इस मैदान से जरा दूर हटकर एक नाला था। उसपर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए उस नाले में आया; लेकिन, कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को हाथों से ढकेलता।

ललकारता : উত্তেজিত কৰা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

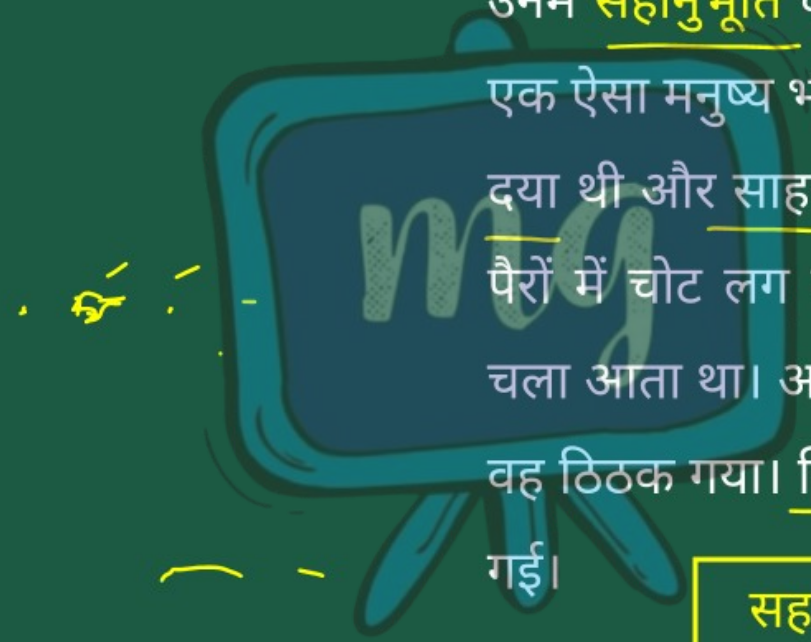
लेकिन, बोझ अधिक था गाड़ी फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता; मगर, वहाँ कोई सहायक नजर न आता था। गाड़ी को अकेले छोड़कर वह कहीं जा भी नहीं सकता था। विपत्ति में फँसा हुआ था।

इसी बीच में खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए झूमते-झामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा; परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ।

निराश : হতাশ, নিৰাশ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



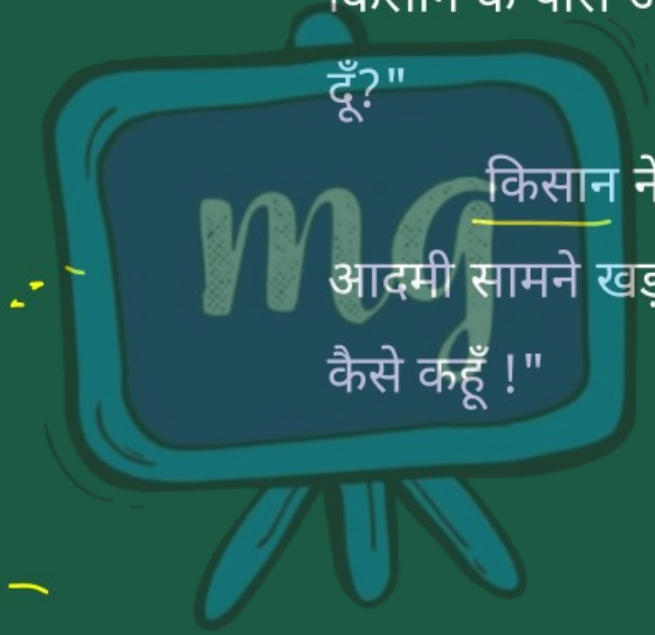
खिलाड़ियों ने भी उसको देखा; मगर बंद आँखों से। उनमें सहानुभूति का नाम न था। लेकिन, उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य भी था, जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए, उसके पैरों में चोट लग गई थी। लैंगड़ाता हुआ वह धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। वह ठिठक गया। किसान को देखते ही सब बात ज्ञात हो गई।

सहानुभूति	:	दया
निगाह	:	दृष्टि

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

हॉकी-स्टिक किनारे पर रख दी, कोट उतार डाला और किसान के पास आकर बोला, "मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"



किसान ने देखा कि एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खड़ा है। डरकर बोला- "हुजूर; मैं आपसे कैसे कहूँ !"

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



युवक ने कहा- "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो। अच्छा! तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधों; मैं पहियों को ढकेलता हूँ। अभी गाड़ी ऊपर जाती है।"

किसान गाड़ी पर आकर बैठा। युवक ने पहियों को जोर लगाकर खिसकाया। कीचड़ बहुत ज्यादा था। वह घुटनों तक जमीन में गड़ गया, लेकिन उसने हिम्मत न हारी।

पहिया : चका

उसने फिर जोर लगाया। उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला। उनकी हिम्मत बँध गई। उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार जोर लगाया। बस! गाड़ी नाले की ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और बोला-"महाराज! आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता।"

सहारा : সংগী

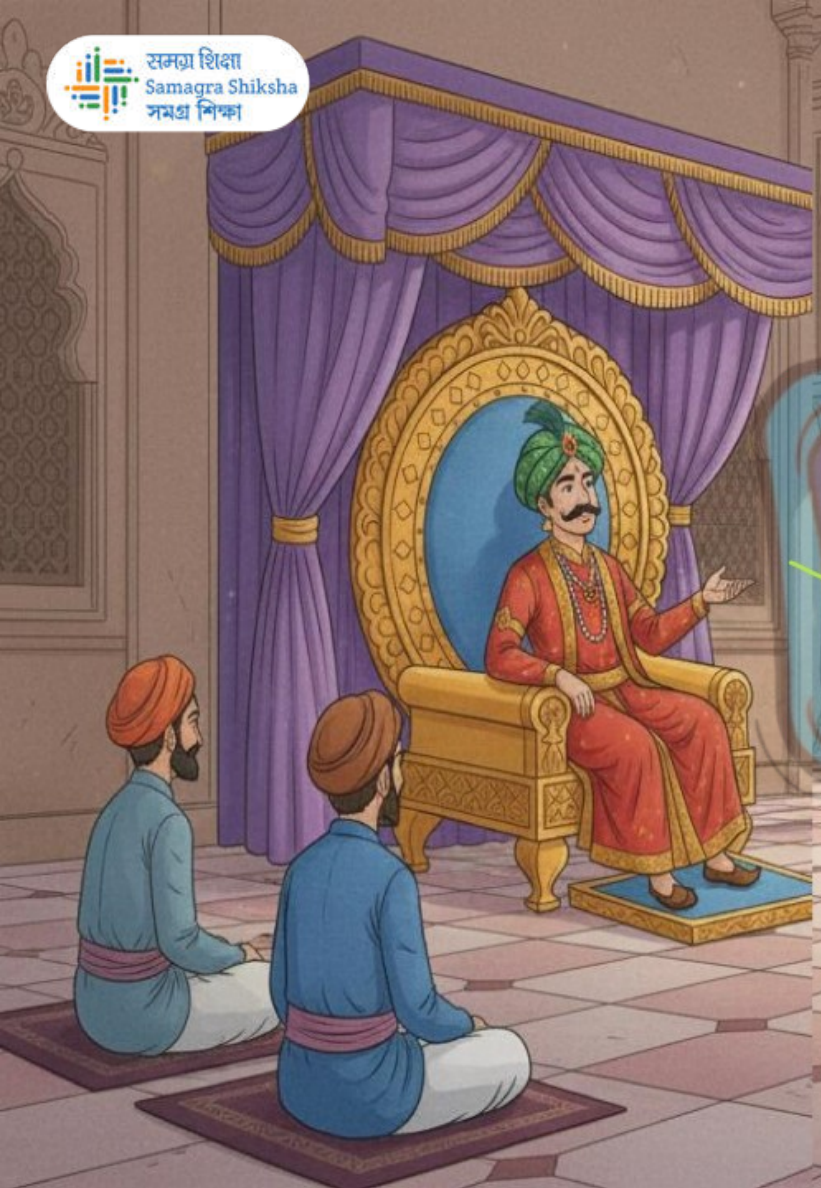
युवक ने हँसकर कहा-" आप मुझे कुछ इनाम देंगे ?"

किसान ने गंभीर भाव से कहा-" नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।" युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ। क्या ये सुजानसिंह तो नहीं? आवाज मिलती-जुलती है। चेहरा-मोहरा भी वही है। किसान ने भी उसकी और तीव्र दृष्टि से देखा। शायद वह उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला- गहरे पानी में पैठने से मोती मिलता है।"

तीव्र : तीव्र

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



निदान महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल से ही अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम आज किसके नसीब जागेंगे; न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपा दृष्टि होगी। संध्या-समय राजा साहब का दरबार सजाया गया।

प्रातःकाल : ৰাতিপুৱা

शहर के रईस और धनाढ्य लोग, राजा के कर्मचारी और दरबारी और दीवानी के उम्मदीवारों के समूह, सब रंग-बिरंगी सज-धज बनाए आ विराजे! उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा- "मेरे दीवानी के उम्मीदवार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए क्षमा कीजिए। मुझे इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो और साथ ही साथ आत्मबल भी।

धनाढ्य : धनी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

हृदय वही है, जो उदार हो; आत्मबल वही है जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे; और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणवाले संसार में कम होते हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं। उन तक हमारी पहुँच ही नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।"

कीर्ति : গৌৰৱ

रियासत के कर्मचारी और रईसों ने पं. जानकीनाथ की तरफ देखा और उम्मीदवारों के दल की
आँखें उधर उठीं; मगर, उन आँखों में सत्कार था और इन आँखों में ईर्ष्या।

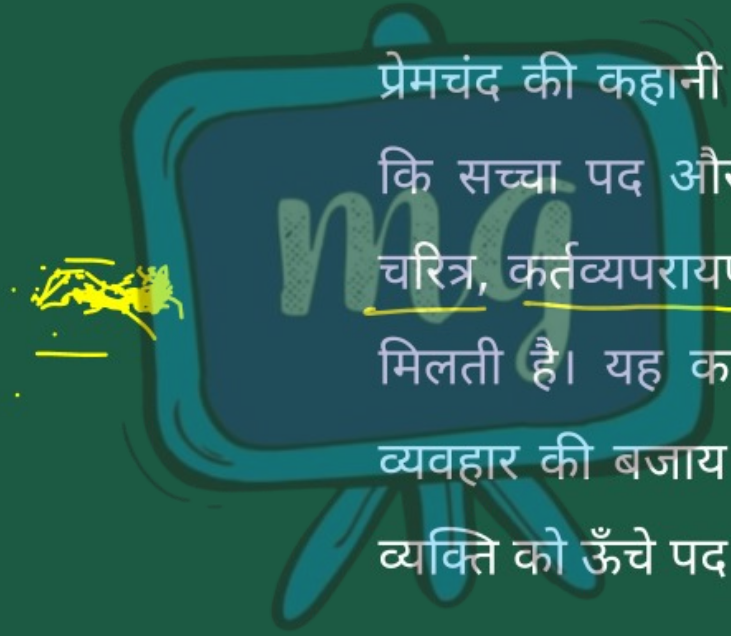
सरदार साहब ने फिर फरमाया "आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं जख्मी होने पर एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ाए, उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का निवास है।

ईर्ष्या	: हिंसा	उदार :	दयालू

ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए; परंतु दया और धर्म के मार्ग से कभी न हटेगा।"



परीक्षा



प्रेमचंद की कहानी 'परीक्षा' से हमें यह सीख मिलती है कि सच्चा पद और प्रतिष्ठा ज्ञान से नहीं, बल्कि अच्छे चरित्र, कर्तव्यपरायणता और सादा जीवन-उच्च विचार से मिलती है। यह कहानी दिखाती है कि कैसे दिखावटी व्यवहार की बजाय वास्तविक गुण और व्यवहार ही एक व्यक्ति को ऊँचे पद के योग्य बनाते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

मूल्यांकन

Under CSR Support by
ipca | Foundation



1 | किस चीज़ से भरी हुई गाड़ी किचड़ मे फँसी ?

क घास

ख अनाज

ग सब्जी

मूल्यांकन



2 गहरे पानी मे पैठने से क्या मिलता हैं ?

क पत्थर

ख सोना

ग मोती

मूल्यांकन



3 | खिलाड़ियों की क्या प्रतिक्रिया थी ?

क वे किसान की मदद के लिए दौड़े

ख उन्होंने किसान को अनदेखा कर दिया

ग उन्होंने किसान का मज़ाक उड़ाया

मूल्यांकन



4 रियासत के नए दीवान कौन थे ?

क सुजानसिंह

ख प्रेमचंद

ग पंडित जानकीनाथ